खूबसूरत भारत को पहले एक कार्यात्मक भारत बनना होगा

जीएस (GS) प्रासंगिकता

- GS II: शासन (Governance), आप्रवासन (Immigration), सार्वजनिक सेवा वितरण।
- GS III: पर्यटन अर्थव्यवस्था, रोजगार, जीएसटी (GST), बुनियादी ढांचा, सतत विकास।

IAS-PCS Institute

चर्चा में क्यों?

अपनी विशाल सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और प्राकृतिक विविधता के बावजूद, भारत छोटे एशियाई देशों की तुलना में विदेशी पर्यटकों को काफी कम संख्या में आकर्षित कर पाता है। हालिया आंकड़े और शशि थरूर की टिप्पणी भारत के पर्यटन पारिस्थितिकी तंत्र (Ecosystem) में गहरी संरचनात्मक कमजोरियों को उजागर करती है, जबकि यह क्षेत्र रोजगार, सॉफ्ट पावर और आर्थिक विकास के लिए अपार संभावनाएं रखता है।

पृष्ठभूमि: भारत की पर्यटन क्षमता जिसका दोहन नहीं हुआ

भारत इन विशेषताओं से संपन्न है:

- प्राचीन सभ्यताएं और जीवित विरासत।
- विविध भूगोल — हिमालय, रेगिस्तान, तट और जंगल।
- आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और अनुभवात्मक पर्यटन की क्षमता।

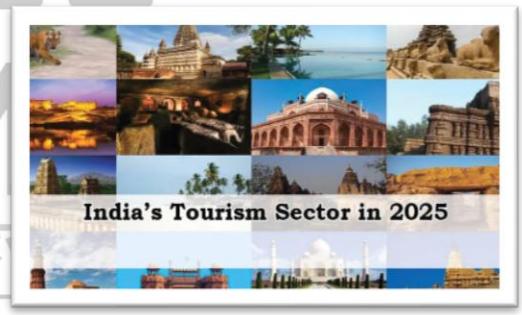

@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

फिर भी, थाईलैंड और सिंगापुर जैसे देशों की तुलना में विदेशी पर्यटकों का आगमन और राजस्व मामूली बना हुआ है। यह अंतर आकर्षण की कमी नहीं, बल्कि शासन और सेवा वितरण की प्रणालीगत विफलताओं को दर्शाता है। आज पर्यटन केवल गंतव्य के बारे में नहीं है, बल्कि पूरी यात्रा के अनुभव — सुरक्षा, सहजता, बुनियादी ढांचे और भरोसे के बारे में है।

तीन मुख्य चुनौतियां: "थ्री-आई" (Three I's)

1. छवि की कमी (धारणा की समस्या - Image Deficit): भारत की वैश्विक छवि अक्सर महिलाओं की सुरक्षा संबंधी चिंताओं, घोटालों, उत्पीड़न और स्वच्छता के मुद्दों से प्रभावित होती है। 'अतुल्य भारत' जैसे ब्रांडिंग अभियान खराब अनुभवों की भरपाई नहीं कर सकते। सफल पर्यटन अर्थव्यवस्थाएं केवल सुंदरता ही नहीं, बल्कि निरंतरता, सुरक्षा और विश्वसनीयता का प्रदर्शन करती हैं। मुख्य बात यह है कि पर्यटक स्वागत महसूस करना चाहते हैं, आशंकित नहीं।

2. बुनियादी ढांचे का अंतर (अनुभव की समस्या - Infrastructure Gap): पर्यटन का अनुभव हवाई अड्डों और आप्रवासन केंद्रों से शुरू होकर सड़कों, टैक्सियों और इंटरनेट तक जाता है। भारत को अंतिम-छोर (last-mile) तक कनेक्टिविटी की कमी, अपर्याप्त सार्वजनिक शौचालय, कचरा प्रबंधन और उपेक्षित विरासत स्थलों जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यह एक विरोधाभास पैदा करता है जहां भारत को एक सस्ता गंतव्य माना जाता है, फिर भी दक्षिण-पूर्व एशिया की तुलना में यहां सेवाओं की गुणवत्ता कम मिलती है।

3. "स्वयं भारत" (पैमाना और सेवा संस्कृति): भारत का विशाल स्तर पहली बार आने वाले पर्यटकों को भीड़, शोर और अव्यवस्था से परेशान कर सकता है। आक्रामक दलाल और घोटालेबाज भी एक बड़ी समस्या हैं। इसके अतिरिक्त, आतिथ्य क्षेत्र में प्रशिक्षित कर्मियों की भारी कमी है क्योंकि पर्यटन की नौकरियों को अक्सर अस्थिर या कम प्रतिष्ठा वाला माना जाता है।

वीजा और आप्रवासन: सॉफ्ट पावर में बाधा

हालांकि ई-वीजा ने पहुंच में सुधार किया है, लेकिन वीजा देने में मनमानी या आप्रवासन केंद्रों पर खराब व्यवहार की घटनाएं देश की प्रतिष्ठा को बहुत नुकसान पहुंचाती हैं। एक आत्मविश्वासी लोकतंत्र को पर्यटकों के साथ संदिग्ध के बजाय अतिथि जैसा व्यवहार करना चाहिए और अधिकारियों को आतिथ्य सत्कार (Hospitality) के गुणों में प्रशिक्षित करना चाहिए।

आर्थिक और रणनीतिक अनिवार्यता के रूप में पर्यटन

रोजगार और समावेश: विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार, पर्यटन में निवेश विनिर्माण (Manufacturing) की तुलना में कहीं अधिक रोजगार पैदा करता है। यह विशेष रूप से अकुशल और अर्ध-कुशल श्रमिकों को लाभ पहुँचाता है। स्वचालन (Automation) के इस दौर में, यह श्रम-गहन रोजगार और क्षेत्रीय संतुलन प्रदान करता है। दक्षिण एशिया में, जहां युवा बेरोजगारी अस्थिरता का कारण बनी है, वहां पर्यटन केवल एक आर्थिक क्षेत्र नहीं बल्कि एक रणनीतिक स्थिरता लाने वाला कारक है।

नीतिगत खामियां: जीएसटी और आतिथ्य: आतिथ्य उद्योग भारत की वैश्विक छवि को बनाता है, फिर भी वर्तमान जीएसटी संरचना पूर्ण इनपुट टैक्स क्रेडिट नहीं देती है। यह नीतिगत विरोधाभास विदेशी मुद्रा अर्जित करने वाले और रोजगार पैदा करने वाले क्षेत्र को नुकसान पहुँचाता है और इसमें तत्काल सुधार की आवश्यकता है।

आगे की राह: धारणा और वास्तविकता को सुधारना

1. **लक्षित रीब्रांडिंग:** 'एक भारत' के बजाय 'कई भारत' की कहानी पेश करें। आध्यात्मिक, साहसिक, लक्जरी और विरासत जैसे थीम-आधारित सर्किट को बढ़ावा दें।
2. **विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचा:** सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) का विस्तार करें, 'धरोहर गोद लें' योजना को बढ़ाएं और एक राष्ट्रव्यापी 'स्वच्छ पर्यटन मिशन' शुरू करें।
3. **सुरक्षा और कौशल विकास:** पर्यटक पुलिस को मजबूत करें, विशेष रूप से महिला कर्मियों को। घोटालों पर नकेल कसें और बहुभाषी गाइडों व सेवा कर्मचारियों को प्रशिक्षित करें।
4. **वीजा और शासन सुधार:** ई-वीजा को और सरल बनाएं और बार-बार आने वाले यात्रियों के लिए लंबी अवधि के वीजा दें।
5. **सतत और सामुदायिक पर्यटन:** संवेदनशील स्थलों पर पर्यटकों की संख्या को नियंत्रित करें और सुनिश्चित करें कि विकास से संस्कृति या पारिस्थितिकी को नुकसान न पहुंचे।

निष्कर्ष

भारत को पुनर्रचना (Reinvention) की नहीं, बल्कि सुधार (Refinement) की आवश्यकता है। यदि छवि, बुनियादी ढांचे और अनुभव को ठीक कर लिया जाए, तो पर्यटन समावेशी विकास और सॉफ्ट पावर का स्तंभ बन सकता है। दुनिया भारत आने के लिए तैयार है; अब भारत को उसकी मेजबानी के लिए तैयार होना होगा।

यूपीएससी मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न (जीएस पेपर III)

प्रश्न: "अपनी विशाल सांस्कृतिक, प्राकृतिक और ऐतिहासिक संपत्तियों के बावजूद, भारत एक शीर्ष वैश्विक पर्यटन स्थल के रूप में उभरने में विफल रहा है।" भारत की पर्यटन क्षमता को सीमित करने वाली संरचनात्मक चुनौतियों का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। पर्यटन को समावेशी विकास, रोजगार सृजन और सॉफ्ट पावर के चालक के रूप में बदलने के लिए एक बहुआयामी रणनीति का सुझाव दीजिए। (250 शब्द)